हिन्दी के पत्रकार और कश्मीर

प्रस्तुति
अनिल चमड़िया
वरुण शैलेश

हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं की भारत के शेष हिस्से में कश्मीर के बारे में आम जन मानस के बीच एक तरह की राय बनाने में सर्वाधिक भूमिका मानी जाती है। भारत में भाषा और धर्म को मिलाने की कोशिश ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी आंदोलन के दौरान से ही देखी जा रही है। ब्रिटिश सत्ता के दौरान से ही हिन्दी को हिन्दुओं की भाषा के रूप में स्थापित करने की विभिन्न स्तरों पर कोशिश का ही ये नतीजा है कि साम्प्रदायिक झगड़ों के दौरान हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं के हिन्दू पक्षी होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। तकनीकी विस्तार के साथ वैसी ही भूमिका इलेक्ट्रॉनिक जन संचार माध्यमों के बीच भी देखी गई। इस विषय को लेकर कई अध्ययन किए गए हैं। हिन्दी के जन संचार माध्यमों द्वारा कश्मीर को भी देखने और जन मानस को दिखाने का एक अलग नजरिया रहा है जो कि वस्तुनिष्ठ तो नहीं ही कहा जा सकता है।

हिन्दी के जन संचार माध्यम एक खास तरह के राष्ट्रवाद को लेकर राय बनाने में कश्मीर को सबसे अनुकूल महसूस करते हैं। एक तो कश्मीर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र है और दूसरा वह पाकिस्तान का सीमावर्ती क्षेत्र है। ब्रिटिश हुकूमत के बाद जब कश्मीर में शेख अब्दुल्ला ने क्रांतिकारी भूमि सुधार लागू किया तो उसे आसानी से साम्प्रदायिक रंग इसी नाते दे दिया गया क्योंकि जमीन के बड़े हिस्से के मालिक सवर्ण हिन्दू थे। पाकिस्तान देश के विभाजन के बाद इस्लामिक राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ जबकि भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की योजना को आम जन मानस ने खारिज कर दिया, लेकिन एक उद्देश्य के रूप में हिन्दुत्ववाद भारतीय राजनीति में एक धारा के रूप में बना रहा। शेष भारत और खासतौर से देश के सबसे बड़े भूभाग जिसे हिन्दी पट्टी के रूप में जाना जाता है वहां हिन्दी के जन संचार माध्यमों ने कश्मीर को लेकर एक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण विकसित करने में कामयाबी हासिल की है जिसमें साम्प्रदायिकता के तत्व हावी हैं। ये भी कहा जा सकता है कि कश्मीर को लेकर हिन्दी पट्टी में एक तरह का अलगाववादी नजरिया विकसित किया गया है। कश्मीर के लोगों के साथ हिन्दी पट्टी के लोगों का रिश्ता कायम नहीं किया जा सका लेकिन दूसरी तरफ जन संचार माध्यमों ने कश्मीर के मुलसमानों के शेष भारत के मुसलमानों से जुड़े होने की प्रचार सामग्री विकसित की। जन मीडिया के अंक-54 में भारत सरकार का एक गोपनीय दस्तावेज प्रकाशित किया गया था वह कश्मीर के बारे में सरकार की प्रचार नीति के ब्यौरे से भरा था। उसमें भी इस बात पर जोर दिया गया था कि कश्मीर के मुसलमानों को देश के शेष हिस्से के मुसलमानों से रिश्ते जोड़ने का प्रचार किया जाए।

मीडिया स्टडीज ग्रुप ने हिन्दी पत्रकारिता के जरिये कश्मीर की एक खास तरह की छवि बनाने की पृष्ठभूमि का अध्ययन करने की एक योजना तैयार की। हिन्दी पत्रकारिता में सक्रिय पत्रकारों के बीच एक सर्वेक्षण किया गया जिसमें कश्मीर के बारे में और कश्मीर के साथ उनके रिश्ते की परतों को समझने की कोशिश की गई है। हिन्दी पत्रकारिता में राष्ट्रवाद की साम्प्रदायिक अवधारणा जटिल अंतर्विरोधों के साथ हमारे सामने प्रस्तुत होती है। मीडिया स्टडीज ग्रुप ने

हिन्दी के जन संचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकारों के बीच एक सर्वेक्षण आयोजित किया। यह सर्वेक्षण ऑनलाइन माध्यम से 16 सितंबर से 22 अक्टूबर 2016 के दौरान किया गया और हिन्दी के पत्रकारों को इसलिए चुना गया क्योंकि वे हिन्दी पट्टी में जनमत बनाने की भूमिका में होते हैं।

हिन्दी भाषाई पत्रकारिता की तस्वीर

मीडिया स्टडीज ग्रुप द्वारा आयोजित सर्वेक्षण में देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक 36 प्रतिशत पत्रकारों ने हिस्सा लिया और क्रमानुसार बिहार के 26 प्रतिशत, मध्यप्रदेश के 9 प्रतिशत, राजस्थान के 7 प्रतिशत, उतराखंड के 6

सर्वे के सवाल

1. उम्र

25-30	31-35	36-40	40-50	50 और उससे ज्यादा	जवाब देने वाले पत्रकार
27 (32%)	23 (27%)	15 (18%)	7 (8%)	12 (14%)	84

2. जन्मस्थान

उत्तर प्रदेश	बिहार	मध्य प्रदेश	दिल्ली	महा राष्ट्र	गुज रात	पंजाब	हरि याणा	राज स्थान	उत्तरा खंड	छत्तीस गढ़	झार खंड	पश्चिम बंगाल	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
31	22	8	6	1	0	0	1	6	5	1	1	1	2	85
(36%)	(26%)	(9%)	(7%)	(1%)	(0%)	(0%)	(1%)	(7%)	(6%)	(1%)	(1%)	(1%)	(2%)	

3. लिंग

स्त्री	पुरुष	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
16	68	0	84
(19%)	(81%)	(0%)	

4. धर्म

हिन्दू	मुस्लिम	सिख	ईसाई	बौद्ध	जैन	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
73	3	1	0	1	0	4	82
(89%)	(4%)	(1%)	(0%)	(1%)	(0%)	(5%)	

5. प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा

महानगर	शहर	कस्बा	गांव	जवाब देने वाले पत्रकार
15	36	19	13	83
(18%)	(43%)	(23%)	(16%)	

6. हाईस्कूल

सरकारी स्कूल से	निजी स्कूल से	जवाब देने वाले पत्रकार
58 (70%)	25 (30%)	83

7. आपका कॉलेज कहां स्थित था

स्थानीय	आपके राज्य के किसी शहर में	राज्य की राजधानी में	दिल्ली में	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
24	27	13	19	4	84
(29%)	(32%)	(15%)	(23%)	(5%)	

8. ग्रेजुएशन में विषय

कला/सामाजिक विज्ञान	विज्ञान	कॉमर्स	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
44	19	7	11	81
(54%)	(23%)	(9%)	(14%)	

प्रतिशत और दो छोटे राज्यों में झारखंड और छत्तीसगढ़ के 1-1 प्रतिशत पत्रकारों ने हिस्सा लिया। दिल्ली में पले बढ़ पत्रकारों की सर्वे में संख्या 7 प्रतिशत है। उनमें पुरुष 81 प्रतिशत और स्त्री 19 प्रतिशत है। राज्यवार और लैंगिक आधार पर सर्वेक्षण में भाग लेने वालों की जो तादाद है वह हिन्दी का राज्यवार विस्तार और हिन्दी के जन संचार माध्यमों में लैंगिक प्रतिनिधित्व की वास्तविक स्थिति के करीब है।

पत्रकारों की पृष्ठभूमि

सर्वे में शामिल 89 प्रतिशत हिन्दू धर्म को मानने वाले पत्रकार हैं जबकि 4 प्रतिशत इस्लाम धर्म को मानने वाले हैं। हालांकि हिन्दी के जन संचार माध्यमों में इस्लाम धर्म को मानने वालों का प्रतिशत 4 से कम है। हिन्दी के जन संचार माध्यमों का चरित्र शहरोन्मुख होता गया है। हिन्दी पत्रकारिता में शहरी प्रतिनिधित्व के रूप में इस तथ्य की पुष्टि होती है। 43 प्रतिशत ने शहरों से प्राथमिक शिक्षा हासिल की है जबकि 18 प्रतिशत ने महानगरों से प्राथमिक शिक्षा हासिल की है। गांव में प्राथमिक शिक्षा हासिल करने वालों की संख्या महज 16 प्रतिशत है और कस्बे के स्कूलों में पढ़कर पत्रकारिता में सक्रिय लोगों की संख्या 23 प्रतिशत है। हिन्दी पत्रकारिता में सक्रिय सदस्यों में 70 प्रतिशत ने सरकारी हाईस्कूलों में शिक्षा प्राप्त की है और 30 प्रतिशत ही गैर सरकारी हाई स्कूलों की पृष्ठभूमि के हैं। शैक्षणिक पृष्ठभूमि आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करती है। हिन्दी पत्रकारिता में 29 प्रतिशत पत्रकार ऐसे हैं जो कि स्थानीय कॉलेजों से पढ़कर निकले और 32 प्रतिशत शहरी इलाके के कॉलेजों से, तो 15 प्रतिशत राज्य की राजधानी और 23 प्रतिशत ने देश की राजधानी दिल्ली के कॉलेजों से अपनी शैक्षणिक पृष्ठभूमि तैयार की है।

पत्रकारिता के लिए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि का संदर्भ महत्वपूर्ण माना जाता है। लेकिन इसके साथ शैक्षणिक प्रशिक्षण भी महत्वपूर्ण होता है। भारत में शैक्षणिक प्रशिक्षण में असमानता भी है और विभिन्न तरह की पद्धतियां, पाठ्यक्रम भी लागू हैं। इनके अलग-अलग राजनीतिक उद्देश्य से इंकार नहीं किया जा सकता है बल्कि इस तथ्य की पुष्टि की गई है कि राजनीतिक विचारधाराओं के लिए समर्थक तैयार करने की एक प्रक्रिया शैक्षणिक संस्थानों के जरिये चलती है। शैक्षणिक प्रशिक्षण में विषयों की भी भूमिका होती है। हिन्दी पत्रकारिता में सक्रिय सदस्यों में 54 प्रतिशत कला से स्नातक हैं जबकि विज्ञान की डिग्री की पृष्ठभूमि वाले महज 23 प्रतिशत हैं। वाणिज्य (कॉमर्स) की पृष्ठभूमि वाले 9 प्रतिशत तो अन्य विषयों की पृष्ठभूमि वाले 14 प्रतिशत हैं।

पत्रकारिता का प्रशिक्षण

हिन्दी पत्रकारिता और कश्मीर के रिश्ते से जुड़े सवालों के आंकड़ों के विश्लेषण से पहले दो अन्य पहलुओं से संबंधित आंकड़ों की प्रस्तुति यहां अनिवार्य लगती है। एक तथ्य यह उभर कर सामने आया कि हिन्दी पत्रकारिता में सक्रिय सदस्यों में 54 प्रतिशत प्राइवेट यानी गैर सरकारी यानी मीडिया कंपनियों द्वारा संचालित या खास तरह की राजनीतिक विचारधारा की तरफ झुकाव रखने वाले गैर सरकारी संस्थाओं के प्रशिक्षण केन्द्र से प्रशिक्षित हैं। संदर्भ के तौर पर यहां उल्लेख किया जा सकता है कि पत्रकारिता के गैर सरकारी प्रशिक्षण केन्द्रों की बड़ी संख्या में स्थापना नई परिघटना है। वह भी खासतौर से 1990 के दशक के बाद से देखी गई है। सर्वे में हिस्सेदारों के अनुसार 25 प्रतिशत ने सरकारी विश्वविद्यालयों से पत्रकारिता का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 20 प्रतिशत ने इन दोनों से भिन्न प्रक्रिया के तहत प्रशिक्षण हासिल किया। दूसरा तथ्य ये है कि सर्वे में भागीदार संख्या उनकी है जिन्हें पत्रकारिता का अनुभव एक से पांच वर्ष का है। ये संख्या 33 प्रतिशत है लेकिन दूसरी तरफ 20 प्रतिशत संख्या उनकी है जिन्हें पत्रकारिता में 20 वर्ष से ज्यादा हो गए। तालिका के आधार पर अन्य पत्रकारों की संख्या देखी जा सकती है। 6 वर्ष से लेकर 20 वर्ष तक के अनुभव वाले पत्रकारों की संख्या 47 प्रतिशत है। इनमें 41 प्रतिशत समाचार पत्रों में तो 5 प्रतिशत पत्रिकाओं में और 17 प्रतिशत टेलीविजन चैनलों में सक्रिय हैं। रेडियो में काम करने वाले महज 2 प्रतिशत हैं जबकि 11 प्रतिशत इंटरनेट से जुड़े हैं और 24 प्रतिशत नौकरी पेशा करने के बजाय अन्य स्तरों पर पत्रकारिता में सक्रिय हैं।

हिन्दी पत्रकारिता में सक्रिय सदस्यों के कश्मीर के साथ रिश्तों को समझने के लिए निम्न आंकड़ों पर गौर किया जा सकता है।

1. संविधान में कश्मीर से संदर्भित धारा 370 के बारे में 46 प्रतिशत हिन्दी के पत्रकारों को समाचार पत्रों से जानकारी मिली। 11-11 प्रतिशत ने स्कूल के शिक्षकों से और भाषणों से इस धारा के बारे में जाना। लेकिन 13 प्रतिशत पत्रकार ऐसे हैं जिन्हें बातचीत के दौरान इस धारा के बारे में जानकारी मिली। टेलीविजन से भी इस धारा के बारे में जानने वालों की तादाद 13 प्रतिशत है। इन आंकड़ों से यह संकेत मिलता है कि संविधान के

9. पत्रकारिता का प्रशिक्षण लिया

पत्रकारिता प्रशिक्षण संस्थान से	विश्वविद्यालय से	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
45	21	17	83
(54%)	(25%)	(20%)	

10. पेशे में अनुभव के वर्ष

1-5	6-10	11-15	16-20	20 से अधिक	जवाब देने वाले पत्रकार
27 (33%)	22 (27%)	10 (12%)	7 (8%)	17 (20%)	83

11. वर्तमान में नौकरी पेशा

अखबार	पत्रिका	टीवी चैनल	रेडियो	इंटरनेट	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
34	4	14	2	9	20	83
(41%)	(5%)	(17%)	(2%)	(11%)	(24%)	

12. कश्मीर के संदर्भ में संविधान की धारा 370 के बारे में कहां से जानकारी मिली?

रिश्तेदार से	स्कूल में शिक्षक से	भाषण से	बातचीत के दौरान	समाजसेवी से	टेलीविजन से	समाचार पत्र से	सोशल मीडिया से	जानकारी नहीं मिली	जवाब देने वाले पत्रकार
0	9	9	13	1	11	38	2	0	83
(0%)	(11%)	(11%)	(16%)	(1%)	(13%)	(46%)	(2%)	0%	

13. संविधान की धारा 370 की राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में पढ़ा है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
67	17	84
(80%)	(20%)	

14. कश्मीर के बारे में हिन्दी में आपने कुछ पढ़ा है?

समाचार पत्र में लेख	पत्रिकाओं में लेख	किताब	राजनीतिक पार्टी के मुखपत्र	शोध पत्र	सामाजिक संगठन का पर्चा	जवाब देने वाले पत्रकार
56	14	11	0	1	2	84
(67%)	(17%)	(13%)	(0%)	(1%)	(2%)	

15. कश्मीर के राजनीतिक इतिहास की जानकारी कहां से मिली?

पाठ्य पुस्तक से	शोध सामग्री से	आपसी बातचीत से	पत्र-पत्रिकाओं से	सोशल मीडिया से	नहीं मिली	जवाब देने वाले पत्रकार
19	5	8	49	1	2	84
(23%)	(6%)	(10%)	(58%)	(1%)	(2%)	

16. भारत के विभाजन के वक्त कश्मीर में पाकिस्तानी कबिलाइयों के आक्रमण के खिलाफ कश्मीरियों की शहादत के बारे में जानते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
58	25	83
(70%)	(30%)	

जरिये इस धारा के बारे में जानने की तरफ पत्रकारों का रुझान नहीं है। जिन माध्यमों से पत्रकारों ने इस धारा के बारे में सुना या जाना है, उस धारा की जानकारी के साथ उन्हें उसकी व्याख्या भी सुनने या जानने को मिली, जबकि प्रत्येक माध्यम अपनी पृष्ठभूमि के अनुसार संविधान के प्रावधानों की व्याख्या कर सकता है।

हालांकि एक दूसरे सवाल के जवाब में 80 प्रतिशत भागीदारों ने ये दावा किया है कि उन्होंने धारा 370 की राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में पढ़ा है जो कि उपरोक्त सवाल से मिले जवाब से एक अंतर्विरोध की स्थिति की तरफ इशारा करता है। यदि 370 की राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में पढ़ने का दावा सही है तो यह धारा 370 के बारे में जानकारी हासिल करने के स्रोतों से भिन्न कैसे हो सकता है? लेकिन 20 प्रतिशत भागीदारों ने स्पष्ट बताया कि धारा 370 की राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में उन्होंने कुछ भी नहीं पढ़ा है।

सर्वे में कश्मीर के बारे में पूछे गए प्रश्नों से भागीदारों के जवाब अंतर्विरोधी होने के स्पष्ट संकेत देते हैं। 67 प्रतिशत भागीदारों ने बताया कि कश्मीर के बारे में उन्होंने जो कुछ पढ़ा है उसका माध्यम समाचार पत्र है। समाचार पत्रों में कश्मीर के बारे में जो कुछ प्रकाशित होता रहा है, उसका भी अलग से अध्ययन किया जा सकता है। लेकिन यह स्पष्ट है कि समाचार पत्रों में कश्मीर को लेकर एक अलगाववादी दृष्टिकोण हावी रहा है। पत्रिकाओं के जरिये कश्मीर के बारे में कुल पढ़ने वालों की तादाद 17 प्रतिशत हैं तो मात्र एक प्रतिशत पत्रकारों ने शोध पत्र के जरिये कश्मीर के बारे में पढ़ा है।

इस जवाब के बाद अगले सवाल के जवाब में एक हद तक अंतर्विरोध की स्थिति देखने को मिलती है। कश्मीर के राजनीतिक इतिहास की जानकारी पाठ्य पुस्तकों से मिलने का दावा करने वाले 23 प्रतिशत हैं। लगता है कि भागीदारों ने कश्मीर से अपने रिश्ते की वास्तविकता को छिपाने के इरादे से बाद के प्रश्नों का सतर्कता से जवाब दिया। बहरहाल राजनीतिक इतिहास की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा जानकारी प्राप्त करने वाले 58 प्रतिशत हैं। शोध सामग्री से केवल 6 प्रतिशत ने कश्मीर के राजनीतिक इतिहास को जाना है।

इस प्रश्न का जवाब भी एक दिलचस्प आंकड़े पेश करता है कि 70 प्रतिशत ने विभाजन के वक्त पाकिस्तान के कबिलाइयों के खिलाफ कश्मीरियों की शहादत के बारे जानने का दावा किया है। 30 प्रतिशत ने साफ इंकार किया कि कश्मीरियों ने विभाजन के वक्त पाकिस्तानियों के खिलाफ लड़ते हुए शहदातें दी थीं।

कश्मीर की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के बारे में थोड़ा बहुत ही जानने वालों की तादाद 42 प्रतिशत है। यानी कश्मीर सुदंरता, फिल्मी शूटिंग, आतंकवाद जैसे विषयों के जरिये ज्यादातर पत्रकारों के बीच जाना जाता रहा है। हालांकि 31 प्रतिशत ने ये दावा किया है कि वे आर्थिक सामाजिक समस्याओं को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। लेकिन इससे पहले के प्रश्नों के जवाब के आंकड़े एक अंतर्विरोधी स्थिति की ओर इशारा करते हैं। कश्मीर की सामाजिक आर्थिक समस्याओं के बारे में ज्यादा नहीं जानने वालों की तादाद 23 प्रतिशत है।

कश्मीर को पहली बार हिन्दी के पत्रकारों ने इस रूप में जाना कि कश्मीर घाटी बहुत सुंदर है। कश्मीर की सुदंरता से 57 प्रतिशत हिन्दी के पत्रकारों के रिश्तों की शुरुआत होती है। 20 प्रतिशत ने तो आतंकवाद के जरिये कश्मीर को पहली बार जाना। फिल्म की शूटिंग कश्मीर में होती है इस नाते कश्मीर को जानने वालों की तादाद 11 प्रतिशत है। चार प्रतिशत ने बताया कि उनकी कश्मीर से रिश्ते की शुरुआत किस रूप में हुई उन्हें याद नहीं है। आठ प्रतिशत ने कश्मीर के साथ भिन्न तरह से अपना रिश्ता बनाया जो कि अगले सवाल से प्राप्त जवाबों से स्पष्ट होता है। कश्मीर का दृश्य सीधे तौर पर देखने वालों की संख्या भी 8 प्रतिशत है। जबकि कश्मीर का दृश्य पहली बार फिल्म के जरिये देखने वालों का 52 प्रतिशत है। 39 प्रतिशत ने टेलीविजन पर कश्मीर के दृश्य पहली बार देखें। यह प्रश्न पूछा गया कि क्या उन्हें जन संचार के माध्यमों में कश्मीर में पर्यटन, फिल्मी शूटिंग और आतंकवाद के अलावा किसी अन्य समाचार रिपोर्ट के बारे में तत्काल याद आता है तो 46 प्रतिशत ने जवाब नहीं दिया। यह जन संचार माध्यमों में कश्मीर की सामाजिक, आर्थिक पहलुओं से जुड़ी खबरों व सामग्री के अभाव के स्पष्ट संकेत कहे जा सकते हैं।

सर्वेक्षण में इन प्रश्नों का विस्तार इस रूप में किया गया कि हिन्दी के पत्रकारों का कश्मीर के लोगों के साथ किस रूप में रिश्ता है। किसी कश्मीरी से नहीं मिलने वाले हिन्दी पत्रकारों का प्रतिशत 25 है। जबकि 49 प्रतिशत ने ये दावा किया है कि उनकी कश्मीरी मुस्लिमों से मुलाकात है और 26 प्रतिशत ने कश्मीर के पंडितों से मिलने का दावा किया है। लेकिन इसके बाद के प्रश्न में भागीदारों में 23 प्रतिशत ने बताया कि उनकी केवल दो

17. कश्मीर की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं के बारे में जानकारी है?

अच्छे से	ज्यादा नहीं	थोड़ा बहुत	कुछ नहीं	कभी कोशिश नहीं की	जवाब देने वाले पत्रकार
26	19	35	2	2	84
(31%)	(23%)	(42%)	(2%)	(2%)	

18. आपने कश्मीर के संदर्भ में पहली बार जाना (एक से ज्यादा विकल्पों पर चिन्ह लगा सकते हैं)?

कश्मीर घाटी की सुंदरता के बारे में	आतंकवाद के बारे में	कश्मीर में फिल्म की शूटिंग के बारे में	याद नहीं	अन्य	जवाब देने वाले पत्रकार
48	17	9	3	7	84
(57%)	(20%)	(11%)	(4%)	(8%)	

19. कश्मीर में पर्यटन, फिल्म के लिए कश्मीर में शूटिंग और आतंकवाद के अलावा किसी टेलीविजन चैनल में देखी गई किसी रिपोर्ट की तत्काल याद आ रही है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
45	38	83
(54%)	(46%)	

20. आपकी मुलाकात कभी किसी कश्मीरी से हुई है और हुई है तो किससे?

कश्मीरी पंडित से	कश्मीरी मुस्लिम से	किसी कश्मीरी से नहीं मिला	जवाब देने वाले पत्रकार
22	41	21	84
(26%)	(49%)	(25%)	

21. सबसे ज्यादा देश में जिस राज्य/राज्यों को जानते हैं?

राज्य जिसमें जन्म लिया	पड़ोसी राज्य को	उत्तर भारत के राज्यों को	उत्तर दक्षिण के सभी राज्यों को	उत्तर-दक्षिण समेत पूर्वोत्तर के सभी राज्यों को	देश के सभी राज्यों को	जवाब देने वाले पत्रकार
31	3	29	6	3	12	84
(37%)	(4%)	(35%)	(7%)	(4%)	(14%)	

22. पूर्वोत्तर भारत के लोग से बात करते हुए आप उसी तरह महसूस करते हैं जैसे किसी मध्य भारत के लोगों के साथ बात करते हुए महसूस करते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
44	40	84
(52%)	(48%)	

23. आपने कश्मीर का दृश्य पहली बार कहां देखा

टेलीविजन पर	फिल्म में	स्वयं जाकर	जवाब देने वाले पत्रकार
33	44	7	84
(39%)	(52%)	(8%)	

घंटे की कश्मीरी से मुलाकात हुई है। एक हफ्ते से ज्यादा समय तक कश्मीरियों के साथ गुजारने वालों की तादाद 35 प्रतिशत है लेकिन 25 प्रतिशत की तो किसी कश्मीरी से बातचीत भी नहीं हुई है, यह हैरान करने वाली जानकारी है।

राष्ट्रवाद बनाम राष्ट्रीय सरोकार

पत्रकारिता के भौगोलिक स्तर यानी राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय स्तर पर विभाजन की प्रक्रिया नई है। यदि मोटे तौर पर यह अध्ययन किया जाए कि क्या 1947 से पूर्व देश के किसी हिस्से से निकलने वाले किसी समाचार पत्र व पत्रिका को क्षेत्रीय कहा जाता था तो इसका जवाब नकारात्मक हासिल होता है। देश के किसी भी हिस्से से प्रकाशित किसी भी पत्र-पत्रिका को राष्ट्रीय ही माना जाता था। भाषाई आधार पर भी पत्रकारिता को विभाजित करने की प्रक्रिया राजनीतिक स्तर पर राष्ट्रीय राजनीति के विभाजित होने की प्रक्रिया के साथ-साथ ही आकार लेती चली गई है। क्षेत्रीय पत्रकारिता और राष्ट्रीय पत्रकारिता का विभाजन भी राजनीतिक है। सक्रिय पत्रकारों का पत्रकारीय सरोकार भी राष्ट्रीय हो ये अपेक्षा उचित नहीं जान पड़ती है। विभिन्न स्तरों पर विभाजित पत्रकारिता ने अपने लिए मानव संसाधन की तैयारी की है। इसीलिए पत्रकारों के बीच वैसे पत्रकारों की खोज कर पाना बहुत मुश्किल है जिनका राष्ट्रव्यापी दृष्टिकोण हो। सर्वे में प्राप्त इन आंकड़ों से यह तस्वीर देखी जा सकती है। एक प्रश्न के जवाब में सर्वे में भागीदार पत्रकारों में 37 प्रतिशत पत्रकारों ने बताया कि वे उस राज्य को सबसे ज्यादा जानते हैं जहां उनका जन्म हुआ है। पड़ोसी राज्यों तक को जानने में दिलचस्पी का अभाव इस हद तक है कि केवल चार प्रतिशत पत्रकार ही पड़ोसी राज्यों को अच्छी तरह से समझते हैं। हालांकि 35 प्रतिशत पत्रकारों ने बताया कि वे उत्तर भारत यानी हिन्दी पट्टी के राज्यों को बेहतर तरीके से जानते व समझते हैं। इन आंकड़ों में एक अंतर्विरोध दिखाई देता है। फिर इन आंकड़ों से ये स्पष्ट होता है कि हिन्दी पट्टी के पत्रकारों में राष्ट्रीय सरोकार का अभाव है। केवल 7 प्रतिशत ने बताया कि वे उत्तर और दक्षिण के सभी राज्यों को अच्छी तरह समझते है। लेकिन उत्तर दक्षिण समेत उत्तर पूर्व के राज्यों को अच्छी तरह समझने वाले पत्रकारों की संख्या महज चार प्रतिशत है। हालांकि 14 प्रतिशत ने ये भी दावा किया है कि वे देश के सभी राज्यों को अच्छी तरह से जानते व समझते हैं।

उपरोक्त आंकड़ों के अंतर्विरोध को समझने में एक दूसरे प्रश्न के जवाब के आंकड़े सहायक हो सकते हैं। सर्वे में पूछा गया कि पूर्वोत्तर के लोगों से बात करते हुए क्या वे एक अलग भाव महसूस करते हैं। सर्वे में शामिल आधे से ज्यादा भागादीरों ने 'हां' में जवाब दिया। 52 प्रतिशत पत्रकार उत्तर पूर्व के लोगों के साथ बातचीत करते हुए असहजता महसूस करते हैं। 48 प्रतिशत ने ये दावा किया कि वे मध्य भारत के लोगों से बातचीत करने और उत्तर पूर्व के लोगों के साथ बातचीत के दौरान किसी तरह का अंतर महसूस नहीं करते हैं।

हिन्दी पत्रकारों की कश्मीर के साथ रिश्ते की पहचान

क) 66 प्रतिशत पत्रकारों को ये जानकारी है कि कश्मीर में जो अपने नामों के साथ पंडित लगाते हैं वे हिन्दू होते हैं। जबकि तथ्य है कि कश्मीर में कई जातीय सूचक का इस्तेमाल कश्मीरी करते हैं चाहें वे हिन्दू हो या मुसलमान। पंडित टाइटल या सरनेम का भी इस्तेमाल हिन्दू और मुस्लिम दोनों करते हैं।

ख) 24 प्रतिशत पत्रकारों ने ये माना कि कश्मीर से केवल हिन्दू विस्थापित हुए हैं। जबकि 76 प्रतिशत पत्रकारों ने बताया कि उन्हें कश्मीर से हिन्दुओं के अलावा मुसलमानों व अन्य के भी विस्थापित होने की जानकारी है।

ग) कश्मीर में मीरवाइज का नाम समाचार पत्रों में अक्सर आता है। हिन्दी के पत्रकारों में 68 प्रतिशत को ये नहीं मालूम है कि मीरवाइज धार्मिक प्रमुख हैं। 68 प्रतिशत उन्हें केवल राजनेता के रूप में देखते हैं।

घ) सर्वे में ये स्पष्ट होता है कि 58 प्रतिशत हिन्दी के पत्रकार कश्मीर के झंडे की पहचान नहीं कर सकते हैं।

ङ) 51 प्रतिशत हिन्दी के पत्रकारों ने ये स्वीकार किया है कि कश्मीर के प्रति हिन्दी पट्टी के लोगों में अलगाव की भावना रहती है।

च) 77 प्रतिशत पत्रकारों ने ये स्वीकार किया कि कश्मीरी लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए कभी भी किसी कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लिया है।

छ) 81 प्रतिशत पत्रकारों ने स्वीकार किया है कि वे कश्मीर से प्रकाशित किसी समाचार पत्र को नहीं पढ़ते हैं।

ज) 61 प्रतिशत पत्रकारों का मानना है कि कश्मीर को लेकर उन समाचार माध्यम की भूमिका अच्छी नहीं पाई जाती है जो कि दिल्ली व राज्यों में केन्द्रित है।

कश्मीर की समस्या और हिन्दी के पत्रकार

क) हिन्दी के पत्रकारों में 45 प्रतिशत का ये मानना है कि कश्मीर की समस्या की जड़ में बाहरी ताकतें है। 18 प्रतिशत

24. किसी कश्मीरी से कितनी देर बात हुई है?

दो घंटे	छह घंटे	एक दिन से ज्यादा	एक सप्ताह से ज्यादा	नहीं हुई	जवाब देने वाले पत्रकार
19	1	14	29	21	84
(23%)	(1%)	(17%)	(35%)	(25%)	

25. कश्मीर में पंडित टाइटल वाले हिन्दू होते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
54(66%)	28 (34%)	82

26. कश्मीर से हिन्दुओं के अलावा मुसलमान व अन्य कश्मीरी भी विस्थापित हुए हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
62 (76%)	20 (24%)	82

27. मीरवाइज कौन है?

राजनेता	धार्मिक प्रमुख	जवाब देने वाले पत्रकार
53 (68%)	25 (32%)	78

28. कश्मीर के झंडे की पहचान कर सकते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
35	48	83
(42%)	(58%)	

29. हिन्दी पट्टी के लोगों में कश्मीर के प्रति अलगाववादी भावना रहती है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
42	40	82
(51%)	(49%)	

30. कश्मीरी लोगों के लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए कभी किसी कार्यक्रम में हिस्सा लिया है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
19	64	83
(23%)	(77%)	

31. कश्मीर से प्रकाशित अखबार पढ़ते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
16	67	83
(19%)	(81%)	

32. कश्मीर पर दिल्ली व राज्य के प्रमुख अखबारों की भूमिका अच्छी है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
33 (39%)	51 (61%)	84

33. कश्मीर की समस्या की जड़ में है?

धार्मिक भावना	बाहरी शक्तियां	कश्मीर के प्रति भेदभाव	जवाब देने वाले पत्रकार
15	37	31	83
(18%)	(45%)	(37%)	

34. कश्मीर में अलगाववाद की भावना पाकिस्तान की वजह से उपजी है?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
46	38	84
(55%)	(45%)	

35. कश्मीर की समस्या का क्या समाधान है?

जनमत संग्रह	कश्मीरियों से बातचीत	पाकिस्तान के साथ बातचीत	कश्मीरियों और पाकिस्तान से बातचीत	सैन्य बलों द्वारा	जवाब देने वाले पत्रकार
16	41	1	17	8	83
(19%)	(49%)	(1%)	(20%)	(10%)	

36. इस्लाम धर्म के झंडे की पहचान कर सकते हैं?

हां	नहीं	जवाब देने वाले पत्रकार
63	19	82
(77%)	(23%)	

धार्मिक भावना को समस्या के रूप में देखते हैं। यानी 63 प्रतिशत प्रकारांतर से पाकिस्तान और इस्लाम को कश्मीर की समस्या की जड़ में देखते हैं। 37 प्रतिशत ऐसे पत्रकार हैं जो कश्मीर के साथ भेदभाव की स्थिति को ही कश्मीर की समस्या के जड़ में देखते हैं।

ख) सर्वे में पूछे गए दूसरे प्रश्न से उपरोक्त विश्लेषण को बल मिलता है। 55 प्रतिशत हिन्दी के पत्रकार ये मानते हैं कि कश्मीर में अलगाववाद की भावना पाकिस्तान की वजह से उपजी है।

ग) हिन्दी के पत्रकारों में 49 प्रतिशत का ये मानना है कि कश्मीर की समस्या का समाधान कश्मीरियों से बातचीत के जरिये ही होना चाहिए जबकि 19 प्रतिशत जनमत संग्रह के पक्ष में हैं। कश्मीरियों के साथ-साथ पाकिस्तान से भी बातचीत के जरिये इस समस्या के समाधान के पक्ष में 20 प्रतिशत पत्रकार हैं। पाकिस्तान के साथ बातचीत कर कश्मीर समस्या का समाधान देखने वाले केवल एक प्रतिशत पत्रकार हैं जबकि 10 प्रतिशत ऐसे पत्रकार हैं जो केवल सैन्य बलों के द्वारा समाधान करना चाहते हैं।

घ) 77 प्रतिशत पत्रकार ये दावा करते हैं कि यदि उनके सामने झंडे रखे जाए तो उसमें वे इस्लाम के झंडे की पहचान कर सकते हैं। ■